3-9-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

क्लास में बच्चों को क्या सुनाया?(सर्विस का समाचार)सर्विस समाचार किसने सुनाया? किसने सुना? जीवात्मा नें सुनाया जीवात्माओं नें सुना। यह ज्ञान आत्माओं को ही सुनाने वाला है बाप। तुम सभी को आत्म अभिमनी होकर बैठना है। आत्माओं को भी बाप ही से वर्सा मिल रहा है फिर सें। बाप आते है भारत में। बेहद का बाप जो कि आत्माओं का बाप शिव है। आत्माओ सभी भाई-2 है। एक ही बाप आकर भारत को फिर सें स्वर्ग बनाते है स्वर्ग कहो सुखधाम कहो वा हेवन कहो, बहिश्त कहो, भारत ही बहिश्त भी था। स्वर्ग भी कहते थे वैकुंठभी कहते थे, पैराडाईज भी कहते थे। उस समय भारत सतोप्रधान था। यह देवी देवतायें ही थे बाकी अन्य कोई भी धर्म नही था।अब अनेक धर्म हुये है। कलयुग है नो। पावन बदले पतित अपवित्र है। स्वर्ग के बदले नर्क है। हेवल के बदले हेल है। सतयुग की है महिमा। कलयुगी को है ग्लानी।यह सारा खेल समझाया जाता है। बच्चों को बाप समझाते है फिर दरबावाड में बाप को मालिक कहजते है। बाप एक ही है। है सबका बाप। बेहद के बाप सें भारत को स्वर्ग का वर्सा मिलता है। बाकी सभी को मिलती ही है मुक्ति। इन देवी देवताओं के राज्य को ही जीवनमुक्ति कहा जाता है। और स्वर्ग भी कहा जाता है। स्वर्ग है तो चन्द्रवंशी नही है।भारत में ल-न का राज्य था तो सुर्यवंशी कहा जाता था। 84 जन्म भी यही लेते है। यह राज्य स्थापन हुआ बाप सें। कृष्ण से नही। कृष्ण को मालिक वा प्र नही कहा जा सकता है। यह बडी भूल है। कृष्ण को तो कोई भी धर्म वाला बाप नही कहेंगें। बच्चों को समझाया है कि कृष्णा को ही गोरा और सांवरा कहते है।कृष्ण की आत्मा पवित्र सतोप्रधान है तो वो गोरा है। फिर 84 जन्म लेते काम चिता पर बैठ सांवरा बन जाते है। यह चक्र कैसे फिरता है वो समझने का है। यह रचता और रचना का ज्ञान जानने से आर्त्मक बन जाते है। भारत वासी

~~कपर का दोष करते है। ईश्वर का डर रहता [illegible]~~

कर्म करेंगे तो ईश्वर धर्मराज द्वारा बहुत सजा देंगे। इसलिये डर रहता है

है। तुम बच्चो अभी कर्म, अकर्म, विकर्म की गति को समझते हो।जानते हो यह कर्म अकर्म हुआ।याद में रह जो कर्म करते है वह अच्छी होती है।रावण राज्य में मनुष्य बुरे काम ही करते है।रामराज्य में कब बुरा काम होता न है। अब श्री मत तो मिलती ही रहती है।कहां बुलाना होता है, यह करना चाहिए। वा न करना चाहिए। हर बात में पूछते रहो। समझो कोई को गोली चलानी x होती है वह तो करना ही पडे। ऐसे धाडे भी है पुलिस कहे कहेंगे कि गोली नहीं मारो।जब मारना ही पडे।परन्तु पहले प्यार से समझाओं। आप प्यार भार होती है ना।वह पुलिस लोग तो मार से ही समझाने की कोशिश करते है।आप प्यार से काम करना चाहिए। सच्ची न करे तो फिर मार प्यार से समझाने से काम आ सकते है।परन्तु उस प्यार में भी योग बल भरा हुआ होगा तो योग की ताकत से कोई भी समझाने से समझेंगे।यह तो जैसे ईश्वर समझाते हैं। तुम ईश्वर के बच्चे योगी हो x ना। तुम्हारे में डबलरी ताकत है। ईश्वर प्यार का सागर है।तुम जानते हो स्वर्ग में प्यार बहुत होता है। अप्यार की कोई बात हो नहीं x होती।अब तुम प्यार का पुरा वर्सा ले रहे हो। लेते2 पुरुषार्थ करते2 फिर नम्बरवार प्यारे बन जावेंगे। बाप कहते हैं किसको भी दुख नहीं देना है। नहीं तो दुखी हो जायेंगे। बाप प्यार का रास्ता बताते है। गुस्सा में आत्मा x आने से ही सिकल भी आ जाता है। कर्मेन्द्रियों से कर लिया फिर तो रजिस्टर खराब हो जावेगा। रजिस्टर खराब हो जावेगा। देवताओं की चाल चलगत का गायन भी है ना। इसलिए बाप कहते है देवताओं की पुजारीयों को समझावो। वह महिमा गाते हैं आप सर्व गुण सम्पन्न और अपनी चाल चलगत भी सुनाते है।अपने को अगेन्सट बताते है तो उनको समझाओं तम ऐसे थे। अब नहीं है फिर होंगे जरूर।तुमको ऐसा देवता बनना है। अपनी चाल ऐसी अच्छी रखो।तो तुम यह बन जावेंगे। अभी और बनो है सम्पुर्ण निर्विकारी होके हमारे में